पशुचिकित्सा के क्षेत्र में पहली बार पंतनगर का दो एक्रिप परियोजनओं में प्रतिनिधित्व

पंतनगर। 12 अक्टूबर, 2009। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा 11वीं पंचवर्षीय योजना में पशुचिकित्सा के क्षेत्र में पहली बार पंतनगर विश्वविद्यालय को दो अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजनाओं (एक्रिप) के केन्द्र के रूप में सम्मिलित किया गया है। यह जानकारी विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट ने आज एक पत्रकार वार्ता के दौरान दी। पहली परियोजना फ्रीजवाल गोपशु पर है जिसकी कुल लागत रू. 117.43 लाख है तथा दूसरी परियोजना साहीवाल गोपशु है जिसकी कुल लागत रू. 26.90 लाख है। डा. बिष्ट ने कहा कि ये दोनों परियोजनायें मिलना विश्वविद्यालय द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशुपालन के क्षेत्र में किये जा रहे अच्छे कार्य का द्योतक हैं। वार्ता में उपस्थित गोपशुओं का परियोजना निदेशालय, मेरठ के निदेशक डा. ए.के. मिश्रा, जो इन दोनों परियोजनाओं का निर्देशन कर रहे हैं। उन्हें बताया कि इन दोनों परियोजनाओं की कुल लागत की 75 प्रतिशत धनराशि का वहन केन्द्र सरकार द्वारा तथा 25 प्रतिशत धनराशि का वहन राज्य सरकार द्वारा किया जायेगा। उन्होंने कहा कि गायों की देशी नस्ल जैस साहीवाल, गिर, अंगोल की उत्पादन क्षमता विदेशी नस्लों के बराबर की जा सकती है। इसी को ध्यान में रखते हुए साहीवाल नस्ल पर ये नयी परियोजना प्रारम्भ की जा रही है। अधिष्ठाता पशुचिकित्सा डा. जे.के. सिंह ने बताया कि ये दोनों परियोजनायें राज्य के किसानों की भागीदारी से चलायी जायेंगी जिसके फलस्वरूप किसानों की गायों की उत्पादन क्षमता में निरन्तर वृद्धि होगी। परियोजना के अंतर्गत गौ पशु योजना निदेशालय मेरठ द्वारा फ्रीजवाल व साहीवाल नस्ल के उत्तम सॉड़ों का वीर्य उपलब्ध कराया जायेगा जो किसानों की गायों को गाभिन करने के प्रयोग में लाया जायेगा। तत्पश्चात जो बछड़ियाँ पैदा होंगी उनके लगातार परीक्षण से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सर्वोत्तम सॉड़ों का चयन होगा जिनसे आगे की संततियाँ पैदा की जायेंगी।

प्रथम परियोजना का संचालन पशुचिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के चार वैज्ञानिकों डा. डी.वी. सिंह, डा. जे.के. प्रसाद, डा. संजय कुमार एवं डा. अनिल कुमार तथा दूसरी परियोजना का संचालन डा. एस.के. सिंह, डा. एम. पटेल एवं डा. आर.एस. बरवाल द्वारा किया जायेगा। ये दोनों परियोजनायें आने वाली पंचवर्षीय योजना में भी कार्यरत रहेंगी। पत्रकार वार्ता में गोपशु योजना निदेशालय मेरठ के प्रधान वैज्ञानिक डा. उमेश सिंह, निदेशक शोध, डा. डी.पी. सिंह, संयुक्त निदेशक शोध डा. महेश कुमार, कुलसचिव डा. के.के. सिंह, अधिष्ठाता प्रौद्योगिकी डा. एम.पी. सिंह, निदेशक प्रशासन डा. जे.पी.एस. गौतम, निदेशक संचार, डा. बी. कुमार इत्यादि उपस्थित थे।